इकाई 17 विकल्प

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 पर्यटन में संरक्षण

17.2.1 अपनापन

17.2.2 नियंत्रण के उपाय

17.2.3 आत्म प्रबंधन

17.2.4 मनिला उद्घोषणा

17.3 विकल्प : कुछ उपाय

17.4 सारांश

17.5 शब्दावली

17.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

17.0 उद्देश्य

पर्यटन और विकास के साथ उसके संबंध आजकल गहन विचार विमर्श के विषय बने हुए हैं। पिछले दिनों पर्यटन राजस्व उत्पन्न करने वाले उद्योग के रूप में उभरा है। किंतु इसका प्रभाव विशेषकर हमारे संसाधनों पर जबरदस्त रहा है और परिणामस्वरूप इसने प्रकृति के संरक्षण के सम्मुख गंभीर रूप से विचार विमर्श प्रारंभ कर दिया है। फिर भी इस बात पर बड़ी उलझन है कि यह क्या है और इसे कैसे प्राप्त किया जाए। इस विचार विमर्श में जो मौलिक दोष हैं वह है मानवीय आर्थिक विकास के विषय में जानकारी का अभाव जो सम्पूर्ण रूप से प्रकृति के भौतिक एवं जैविक संसाधनों के सुव्यवस्थित विकास पर निर्भर हैं। इन विषयों को ध्यान में रखकर इस इकाई में हमारा उद्देश्य आपको :

- संरक्षण का अर्थ समझाना है,
- संरक्षण के प्रयासों में आनेवाली बाधाओं से आपको अवगत कराना है,
- यह अनुभव कराना है कि किस प्रकार पर्यटन को संरक्षण के साधन के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है,
- नीतिपरक निर्णयों के कार्यक्रम बनाने में विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता के विषय में जानकारी देना है,
- इस इकाई से प्राप्त आवश्यक जानकारी का उपयोग करना सिखाना है।

17.1 प्रस्तावना

समस्त मानवीय क्रियाएं समाज और जैव भौतिक विश्व के कुछ विशेष प्रकार के संबंधों के बीच सम्पन्न होती हैं। जब ऐसी क्रियाएं प्रकृति की अपनी क्रियाओं की अपेक्षा छोटे पैमाने पर होती हैं तो जैव भौतिक विश्व पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता किंतु जब प्रकृति के टिकाऊपन की क्षमता की सीमा को उपेक्षा करते हुए बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप हो तो परिस्थिति अत्यंत गंभीर हो जाती है। यही कारण है कि पर्यटन को प्राकृतिक संसाधनों के विकास का दोषी ठहराया जाता है और उस पर स्थानीय लोगों

के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करने का अभियोग भी लगाया जाता है। पर्यटन इस क्षति के लिए केवल एक सीमा तक ही उत्तरदायी है। इस रूप में इस नुकसान की जिम्मेवारी पर्यटन पर न होकर अनियोजित विकास या विकास की खराब योजना बनाने वाले नीति निर्माताओं पर होती है।

पर्यटन संबंधी अधिसंरचनात्मक सुविधाओं जैसे होटल, रेस्तरां दुकाने, ट्रैवेल एजेंसियां आदि का अव्यवस्थित केन्द्रीकरण स्थानीय लोगों के अधिकांश निवास स्थानों के विस्थापन के अतिरिक्त परिवहन संकुलन, नागरिक सुविधाओं में कमी और नवीकृत हो जाने वाले और नवीकृत न हो सकने वाले संसाधनों के अभाव का कारण बना। इन सारी बातों का संभावित दुष्प्रभाव विशेषत: उन्हीं बातों पर पड़ेगा जिन्होंने प्रारंभ में मनोरंजन के लिए पर्यटकों को आकर्षित किया था। इसीलिए आज यह प्रश्न पूछा जाता है कि क्या पर्यटक पर्यटन को नष्ट कर देंगे ?

अब जरूरत इस बात की है कि समय निकलने से पहले इस विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए। सुव्यवस्थित योजना बनाकर और उसके सावधानीपूर्वक कार्यान्वन के द्वारा मौजूदा परिदृश्य को बदला जा सकता है। हम जानते हैं कि पर्यटन उद्योग में अपार संभावनाएं हैं जिन्हें संरक्षण के साधन के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है और प्राकृतिक सम्पदा के बिना बाधा को सुनिश्चित किया जा सकता है। इसकी भूमिका की यहाँ विगत अनुभवों, प्रमाणों और कार्य योजना की बुद्धिमता के आधार पर जाँच करेंगे।

17.2 पर्यटन में संरक्षण

इस भाग में हम विवेचनात्मक दृष्टि से विश्लेषण करेंगे कि पर्यटन हमारे संसाधनों का संरक्षण किस प्रकार कर सकता है। किंतु इस पर विचार करने से पहले सर्वप्रथम हमें संरक्षण का अर्थ समझ लेना चाहिए। मोटे रूप से और हमारे इस विचार विमर्श के अनुरूप संरक्षण का अर्थ निम्नलिखित दो तत्वों पर आधारित होगा:

1) संरक्षण हमारे प्राकृतिक संसाधनों को चाहे वह नवीकरण योग्य हों या नवीकृत नहीं किए जा सकें नष्ट या क्षतिग्रस्त होने से बचाने की एक विधि है। चूंकि प्राकृतिक संसाधन सीमित है उनका अविवेकपूर्ण उपयोग तीव्र अभाव और समाप्ति का कारण बन सकता है। इसी कारण पारिस्थितिक वैज्ञानिक एक पर्यावरण के तहत समस्त जीवों की परस्पर निर्भरता के महत्व पर बल देते हैं।

2) यहीं जीवन की सम्पूर्णता की अवधारणा का महत्व है। इसके अनुसार जीवित और अजीवित घटकों को एक साथ मिलाकर सम्पूर्ण का निर्माण होता है जो भौतिक एवं जैविक नियमों के अनुसार नियंत्रित होते हैं। यह प्राकृतिक संसाधनों के साथ मानवीय आदान-प्रदान का अध्ययन भी करता है और समन्वित व्यवस्था के एक अंग के रूप में इसके उपयोग में प्रौद्योगिकी का प्रयोग भी किया जाता है। पर्यावरण का संरक्षण और उसका मानव निर्मित वस्तुओं के साथ एकीकरण पर्यटकों को लगातार आकर्षित करते रहने और उस स्थल की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए अनिवार्य है। इसके लिए सुरक्षित रखे गए क्षेत्र में कम से कम घुसपैठ को अनुमति दी जानी चाहिए और भविष्य में उपयोग के लिए प्रकृति के अधिकतम संरक्षण पर बल देना चाहिए।

आजकल क्षेत्र विशेष की आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए जन पर्यटन को एक सम्पन्न साधन के रूप में देखा जा रहा है। इससे संसाधनों का संरक्षण भी हो सकेगा। विकसित देशों में पर्यटन की बढ़ी हुई माँग से विदेशी मुद्रा अर्जन भी हो सकता है। अधिसंरचनात्मक सुविधाओं जैसे होटलों, रेस्तरां, शापिंग कॉम्पलेक्सों और परिवहन सुविधाओं में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि की आशा भी है। इस प्रकार पर्यटन में श्रम की माँग बढ़ेगी और इससे कुशल एवं अकुशल दोनों प्रकार की श्रेणियों में रोजगार उत्पन्न किया जा सकेगा। यहाँ तक कि कम विकसित क्षेत्रों में भी पर्यटन को आकर्षित करने वाली गतिविधियों के द्वारा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा सकते हैं। किंतु उचित प्रबंधन और स्थानीय लोगों की भागीदारी से ही ऐसा हो पाना संभव है। हम इन पक्षों की विवेचना आगामी उपभागों में करेंगे।

17.2.1 अपनापन

पर्यटन से संबंधित नीतियाँ निर्धारित करते समय या योजना बनाते समय आम तौर से स्थानीय लोगों को सम्मिलित नहीं किया जाता। इससे पर्यटन स्थानीय परिवेश से अलग-थलग पड़ जाता है। यदि स्थानीय लोगों को प्रबंधन प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाए तो उनमें निश्चित रूप से लगाव की भावना पैदा करेगा और परिणाम अच्छा निकलेगा। हम जानते हैं कि वन्य जीवन आरक्षित क्षेत्र से पर्यटन की आय में बढ़ोत्तरी हो सकती है। किंतु अभी तक इससे पर्याप्त लाभ स्थानीय लोगों तक नहीं पहुँच पाया है। यदि पर्यटन से प्राप्त आय का उचित अंश स्थानीय प्रबंध समितियों द्वारा रख लिया जाए तो लोगों में क्षेत्र और वन्य प्राणियों के आवास के महत्व के प्रति अधिक प्रेरित किया जा सकता है और फिर वह उनकी बरबादी में भागीदार नहीं बनेंगे जैसे अधिक घास चराने, लकड़ी काटने या गैर कानूनी शिकार करने में सम्मिलित नहीं होंगे। ऐसी योजनाएं जाम्बिया की लुआंग घाटी में प्रारंभ की गई है। स्थानीय लोग केवल वन्य प्राणियों के प्रबंधन में ही भाग नही लेते बल्कि वन्य प्राणी पर्यटन से काफी धन भी प्राप्त होता है जो स्थानीय समुदायों के पास रहता है। अनधिकृत शिकार में अचानक कमी इसका गंभीर और व्यापक परिणाम है। वन्य प्राणियों के संरक्षण के प्रति गाँववासियों का व्यवहार अधिक सकारात्मक हो गया है।

17.2.2 नियंत्रण के उपाय

पर्यटन विकास के लिए नियंत्रण के उपाय करने होंगे तभी संसाधनों का संरक्षण हो सकेगा। संसाधनों का उल्टा सीधा और अन्धाधुन्ध उपयोग का परिणाम सदैव नकारात्मक रहा है। अत: नियोजकों के लिए यह आवश्यक है कि संसाधनों के उपयोग में कुछ नियमितता के उपाय खोज लें। इस संदर्भ में उत्तरी अमेरिका का देश बर्मूडा सम्पूर्ण पर्यावरणीय नियंत्रण के मामले में एक असाधारण उदाहरण है। इसमें न केवल पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखा है बल्कि काफी हद तक पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दिया है जिसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि जो उद्योग 1960 में लघु उद्योग के रूप में विकसित हुआ था आज उस देश का प्रमुख उद्योग है। यह बर्मूडा के सकल राष्ट्रीय उत्पादन का 45% प्रदान करता है। अधिकारी वर्ग केवल पर्यटक आकर्षण के विकास, अनुरक्षण और संचालन को ही बहुत महत्व नहीं देते हैं बल्कि वे पर्यावरण के सुरक्षा का उपाय भी करते हैं और स्थानीय विशेषताओं को पर्यटकों के अभिरुचि के रूप में बचाकर रखने का प्रयास भी करते हैं। योजना के सख्त नियमों के कारण नई द्वीप की वास्तुशिल्पीय शैली के अनुसार ही नई इमारतों का निर्माण किया जाता है। कोई परिवार एक से अधिक कार नहीं रख सकता और गति सीमा 20 मील प्रति घंटा ही रहती है। सुनियोजित नियोजन के कारण इसने प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण को क्षति पहुँचाए बिना समस्त समाज में आर्थिक लाभ वितरित किया है।

17.2.3 आत्म प्रबंधन

पर्यटन उद्योग एक विशिष्ट सेवा उद्योग है जो कार्यकर्ताओं और मालिकों के पुनर्गठन के द्वारा उच्चतर उत्पादकता और कार्यशीलता प्रदान कर सकता है जिसे सहकार्यकर्ताओं के आत्म प्रबंधन के रूप में जाना जाता है। सरकार आत्म प्रबंधन करने वाले संगठन या संयुक्त रूप से प्रबंधन करने वाले संगठन स्थापित कर सकती है। इन संगठनों में बोनस की व्यवस्था होती है और बोनस काम पर निर्भर करता है और दूसरी ओर पर्यटक बेहतर सेवाओं की आशा कर सकते हैं। एक बार जब उनके साथ अपने परिवारों के सदस्यों जैसा प्रेमपूर्ण और अपनेपन का व्यवहार किया जाता है तो वह फिर आना चाहते हैं या अन्य पर्यटकों को यहाँ की सुविधाओं से अवगत कराते हैं। इस प्रकार आय काफी बढ़ सकती है।

ऐसी सुविधाओं के लिए विशाल अधिसंरचनात्मक सुविधाओं की आवश्यकता नहीं है और इस प्रकार की सुविधाएं संरक्षण के प्रति मैत्रीपूर्ण भी होती हैं। इस नई व्यवस्था में बेरोजगारी या कम वेतन की समस्या नहीं होती। कार्यकर्ताओं में मानव और प्रकृति के मध्य संबंध को संतुलित करने के लिए एक

समझ और प्रेरणा पैदा होगी। इस तरह लोग अपने परिवेश को नष्ट नहीं होने देंगे। वे यह अनुभव करेंगे संसाधनों की सुरक्षा सर्वोच्च महत्व की बात है क्योंकि अपने स्थान की सुरक्षा जहाँ वह निवास करते हैं और अपने बच्चों का पालन पोषण करते हैं स्वयं उनके हित में है। स्वामित्व की प्रणाली के अधीन सुरक्षा के लिए वह अपने स्वामित्व के अधिकार का उपयोग कर सकते हैं। स्वास्थ्यवर्धक पेय एवं स्नान जल, स्वच्छ वायु और शांत आवास सहित समुद्र तट इस प्रकार की सुरक्षा प्रदान करती है जो पर्यटकों के लिए बुनियादी आकर्षण है। इस संदर्भ में हम जापानी **मिन-शूकू** व्यवस्था का हवाला दे सकते हैं।

जापान के **मिन-शूकू** लोगों के रहने का स्थान है। ये परिवार द्वारा प्रतिबंधित छोटे पैमाने की पर्यटन सुविधा है। इनमें कई कमरे होते हैं और यहाँ दो परिवार या पर्यटक ठहर सकते हैं। मेज़बान परिवार के सदस्य और प्रबंधक पर्यटकों का स्नेहपूर्ण स्वागत करते हैं और सरलता के साथ आपसी बातचीत से उनके साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लेते हैं। आपसी बातचीत के दौरान यहाँ स्थानीय सूचनाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं जो बड़े होटलों में अक्सर संभव नहीं होता। यदि वह मेज़बान परिवार को पसन्द करते हैं तो वह पुराने मित्रों की तरह दोबारा आ सकते हैं। पर्यटकों को दी गई ऐसी सुविधाएं कई कारणों से आदर्श सिद्ध हुई हैं। सर्वप्रथम तो यह कि इन्हें चलाने के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता नहीं होती ओर दूसरे कि ये पारिस्थितिक दृष्टि से भी उपयुक्त होते हैं क्योंकि उनके लिए अधिसंरचनात्मक सुविधाओं की आवश्यकता नहीं होती। तीसरी बात कि स्थानीय लोगों एवं पर्यटकों के मध्य व्यक्तिगत सम्पर्क और आपसी तालमेल के द्वारा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि संसाधनों की बरबादी या अन्धाधुन्ध उपयोग न हो।

पारम्परिक ग्रामीण समाजों में सामाजिक आर्थिक निर्णय सामाजिक आर्थिक एवं जनसांख्यकी कारकों की परस्पर जटिल आदान-प्रदान प्रक्रिया पर आधारित होते थे। परम्परा से प्राप्त अनुभव के आधार पर लोग संसाधनों का प्रबंधन कुशलता और विवेकपूर्ण ढंग से करते रहे थे। और इसके लिए एक दूसरे के साथ सहयोग करते रहे थे। किसी प्रकार की पर्यटन संबंधी गतिविधि की योजना बनाते समय स्थानीय लोगों को सम्मिलित करने का समय फिर से आ गया है। इसलिए पर्यटन और प्राकृतिक संसाधन विकास के क्षेत्रों में सहयोग और संगति को विस्तृत करने की आवश्यकता है। विवेकपूर्ण आधार पर नई वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग लोगों के अविवेकपूर्ण व्यवहार को बदल सकता है और हमें अपने संसाधनों के अधिकतम उपयोग करने में मदद मिल सकती है। हमारे लिए यहाँ यह याद रखना चाहिए कि पर्यटन के लिए जो वृहद योजना या मास्टर प्लान बने वह जैव विविधता की मौलिक विशेषता को सदैव बनाए रखने में सहयोगी सिद्ध हो।

17.2.4 मनीला उद्घोषणा

सारे विश्व में अपने सामूहिक भविष्य को बचाने या संसाधन संरक्षण के प्रति चेतना जागृत हो चुकी है। पर्यटन उद्योग द्वारा अपनाए जाने वाले कार्यक्रम और नीति निर्धारण के विषय पर विश्व स्तरीय वाद विवाद चल रहा है ताकि संरक्षण को कायम रखते हुए लाभ उपलब्ध कराया जा सके। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विश्व पर्यटन संगठन (W.T.O) ने अक्टूबर 1980 में मनीला में अपना सम्मेलन आयोजित किया और उपस्थित सदस्यों में निम्नलिखित समझौते पर हस्ताक्षर किए :

मनुष्य के पर्यावरण के विभिन्न संघटकों की सुरक्षा, विकास और सुधार पर्यटन के सामंजस्यपूर्ण विकास का एक मूलभूतशर्त है। इसी प्रकार समझदार पर्यटन प्रबंधन मानवीय भौतिक पर्यावरण एवं संस्कृति विरासत की सुरक्षा और विकास में बड़े पैमाने पर योगदान दे सकता है और इसके साथ ही साथ मानव जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार आ सकता है। अत: यह उचित है कि पर्यटन विकास और स्वस्थ पर्यावरणीय प्रबंधन राष्ट्रीय विकास नीतियों का अभिन्न अंग होना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) संसाधनों के संरक्षण से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन किस प्रकार संरक्षण से संबंधित है ?

.....

.....

.....

.....

.....

17.3 विकल्प : कुछ उपाय

संरक्षण का कार्य और वांछनीय वातावरण पैदा करना एक कठिन उद्देश्य बन गया है। अधिक ऊँची होती इमारतों, प्रदूषण, संसाधनों की बरबादी, घुटन आदि ने पर्यटन को बदनाम किया है। अत: यह आवश्यक है कि किसी पर्यटन विकास कार्यक्रम की योजना और नीति बनाते अपनाते समय ध्यान में रखने योग्य बातों पर सविस्तार विचार किया जाए। निम्नलिखित दिशा निर्देश सोच विचार के लिए प्रस्तुत हैं :

i) क्षमता के अनुरूप भूमि उपयोग का निर्धारण आवश्यक है। ऐसे क्षेत्र जिनमें पर्यटन संभावना है किंतु कृषीय एवं औद्योगिक संसाधनों का अभाव है उनकी पहचान कर के उन क्षेत्रों के आर्थिक लाभों का समय-समय पर मूल्यांकन करना चाहिए।

ii) पर्यटन विकास को संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर आधारित होना चाहिए। अत्यधिक उपयोग, जो संसाधनों के नष्ट या क्षय होने के कारण बन सकता है, की अनुमति किसी भी स्थिति में नहीं दी जानी चाहिए। पर्यटन विकास और समस्त पारिस्थितिकी के मध्य परस्पर संबंधों को महत्व देना चाहिए। वन्य प्राणियों, वनों, पर्वतों और समुद्री तटों के संरक्षण को वरीयता दी जानी चाहिए। नवीकृत हो सकने वाली ऊर्जा के साधन को महत्व दिया जाना चाहिए। दुर्लभ या नवीकृत न हो सकनेवाली ऊर्जा का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। वैज्ञानिक किंतु पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों का संसाधनों के उपयोग के लिए इस्तेमाल करना चाहिए।

iii) पर्यटन विकास के व्यवस्थित प्रबंधन के लिए पर्यटन की उचित योजन और अन्य सम्बद्ध शाखाओं से उसका समन्वय आवश्यक है। स्थिति की लगातार देखभाल और समय-समय पर उसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए जो कि हमें आनेवाले खतरे की सूचना दे सके। संरक्षण के स्वीकार्य नीतियों को सम्बद्ध क्षेत्र की संतृप्ति क्षमता को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। मानवकृत और प्राकृतिक सम्पदा को सावधानी के साथ योजनाबद्ध करके एकत्र किया जा सकता है। और सख्त से सख्त माँग पूरी की जा सकती है।

iv) मनुष्य की मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने को सर्वोच्च वरीयता दी जानी चाहिए। ऐसा करते समय स्थानीय लोगों को निश्चित रूप से सम्मिलित करना चाहिए क्योंकि वह अपने संसाधनों का अधिक दक्षता के साथ प्रबंधन कर सकते हैं। इस प्रकार की भागीदारी से संसाधनों पर कम से कम दबाव पड़ता है और पर्यावरण की टिकाऊ उत्पादकता बनी रहती है।

v) पर्यटन को और अधिक क्षमतावान बनाने के लिए यह आवश्यक है कि व्यावसायिकता और प्रबंधन कौशल को इस उद्योग में बढ़ावा दिया जाए। विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की जा सकती है। ऐसा करने से संसाधनों के संरक्षण और पर्यटन के विकास के लक्ष्य को बेहतर ढंग से प्राप्त किया जा सकता है।

vi) क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों को उस क्षेत्र की संभावना और संपोषण क्षमता के अनुसार निर्धारित और वर्गीकृत करना चाहिए। हम निम्नलिखित पद्धति के अनुसार कार्य कर सकते हैं :

प्रथम श्रेणी – ऐसे क्षेत्रों को सदैव के लिए अछूता छोड़ देना चाहिए। उनका किसी भी स्थिति में उपयोग नहीं करना चाहिए।

द्वितीय श्रेणी – ऐसे क्षेत्रों में सार्वजनिक प्रवेश सीमित होना चाहिए। उन्हें अर्द्ध-आरक्षित क्षेत्र घोषित करना चाहिए।

तृतीय श्रेणी – ऐसे क्षेत्रों का उपयोग मनोरंजन के लिए किया जा सकता है किंतु उल्टे सीधे ढंग से या अविवेकपूर्ण ढंग से उनका उपयोग नहीं करना चाहिए।

इस प्रकार के वर्गीकरण से न केवल संसाधनों की सुरक्षा में सहयोग मिलता है बल्कि उनकी पोषण क्षमता के साथ साथ उनके सौन्दर्य में भी वृद्धि होती है।

vii) संरक्षण के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों में बढ़ावा देना आवश्यक है :

- जैविक एवं सांस्कृतिक विविधता
- विकेंद्रीत योजना
- बहुल मूल्य व्यवस्थाओं का उपयोग
- सरल प्रौद्योगिकी, और
- देशी प्रबंधन का उपयोग

ऐसी नीतियों के प्रयोग से जीवन के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पक्षों में मौलिक परिवर्तन होगा।

viii) संसाधनों के उपयोग के संदर्भ में हमारे दृष्टिकोण और नजरिया में परिवर्तन लाने की नितांत आवश्यकता है। मनोरंजनात्मक संसाधनों को प्रकृति की बहुमूल्य विरासत समझना चाहिए और उसका रूढ़िवादी तरीके से उपयोग नहीं करना चाहिए। अपने सामूहिक भविष्य के लिए अत्यंत बहुमूल्य सम्पदा के रूप में देखना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यटन के विकास में आत्म प्रबंधन की क्या भूमिका है ?

.....

.....

.....

.....

2) मनीला उद्घोषणा क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) संरक्षण के किन्हीं दो वैकल्पिक उपायों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

17.4 सारांश

पर्यटन अत्यधिक राजस्व उपार्जन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बताया जा रहा है। इसमें अन्य सम्बद्ध क्षेत्रों को आयोजित करने और बनाए रखने की जबरदस्त क्षमता है। सौभाग्यवश हमारे पास बहुत अधिक प्राकृतिक संसाधन हैं जिन्हें सांमजस्यपूर्ण और व्यवस्थित ढंग से काम में लाने की आवश्यकता है ताकि पर्यटन उद्योग को सही अर्थों में अच्छी तरह व्यवस्थित और विकसित किया जा सके। इसके साथ ही पर्यटन के कारण होनेवाले लाभ को अपने संसाधनों के संरक्षण के प्रोत्साहन पर व्यय किया जा सकता है। हम अपनी पिछली इकाई (संख्या 16) में विचार कर चुके हैं कि पर्यटन विकास और संरक्षण के मध्य संबंध किस प्रकार वांछित परिणाम प्राप्त करने में सहयोगी हो सकते हैं। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपने संसाधनों के संरक्षण के लिए पर्यटन की आंतरिक भावना और निहित संभावनाओं को समझें। आप पर्यटन स्थलों की एक सूची तैयार करें और सुझाव दें कि आपके क्षेत्र के इन स्थलों के उचित उपयोग की किस प्रकार व्यवस्था की जाए कि उनका मौलिक चरित्र नष्ट न हो।

17.5 शब्दावली

अलगाव : लोगों की समस्याओं या नीतियों से भावनात्मक दूरी

सुसंगत : खुशी-खुशी एक साथ रहने की क्षमता

उपभोक्तावाद : वस्तुओं के उनके सम्पूर्ण मूल्य पर विचार किए बिना उपभोग की जीवन शैली का दर्शन

क्षीणता : वस्तुओं का इस प्रकार उपयोग कि वह बहुत कम शेष रहे या बिल्कुल न बचे

पारिस्थितिकी : जीव विज्ञान की एक शाखा जिसमें जीवित वस्तुओं के निवास स्थान का अध्ययन किया जाता है

उल्टा सीधा : किसी क्रम या योजना के बिना

सुव्यवस्थित : इच्छा के साथ या संतोषजनक रूप से व्यवस्थित

देशी : मूल निवासी, प्राकृतिक रूप से किसी क्षेत्र के वास्तविक निवासी

घुसपैठ : सुरक्षित क्षेत्र में बिना अनुमति के प्रवेश

मिन-शूकून : जापान में लोगों के निवास स्थान

विरासत : पूर्वजों की स्थाई निधि में से प्राप्त उत्तराधिकार

अक्षुब्ध : बिना किसी समस्या के

वन्य-प्राणी : प्राणी जीवन से संबंधित, उनका व्यवहार एवं निवास स्थान

17.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अपने नवीकृत और गैर नवीकृत प्राकृतिक संसाधनों को बरबाद होने या क्षतिग्रस्त होने से बचाने की विधि संरक्षण कहलाती है

2) देखिए उपभाग 17.2.1

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 17.3

2) देखिए उपभाग 17.2.4

3) देखिए भाग 17.3

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

जॉनली : **टूरिज्म एण्ड डेवलपमेण्ट इन द थर्ड वर्ल्ड**, राउटलेज, लन्दन, 1988

ए वर्ल्ड टूरिज़म आर्गेनाइजेशन पब्लिकेशन : **नेशनल एण्ड रीजनल टूरिज्म प्लैनिंग**, डब्ल्यू. टी. ओ. राउटलेज, लन्दन, 1994

इस खंड के लिए अभ्यास

अभ्यास-1

अपने क्षेत्र/नगर में पर्यटन की उपलब्ध अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के आधार पर स्थिति दस्तावेज (स्टेट्स पेपर) तैयार कीजिए और मूल्यांकन कीजिए कि इस सुविधा का क्षेत्र/नगर की पारिस्थितिकी पर क्या प्रभाव पड़ा।

अभ्यास-2

अभ्यास-1 में तैयार किए गए स्थिति दस्तावेज पर आधारित एक रिर्पोट लिखिए और पर्यटन की दृष्टि से किसी अधिक उन्नत क्षेत्र/नगर की ऐसी ही सुविधाओं से उनकी तुलना कीजिए।

अभ्यास-3

अभ्यास-2 में जो रिपोर्ट तैयार की गई है उसकी इकाई 17 में सुझाए गए विकल्पों के आलोक में आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए और अपने क्षेत्र में उचित पर्यटन विकास के लिए संक्षेप में एक नीति दस्तावेज तैयार कीजिए।

परिशिष्ट

एक विश्व की खोज के लिए
एक पृथ्वी की सुरक्षा के लिए

एक पारिस्थितिक स्नेही पर्यटक बनिए

अपनी प्राकृतिक विरासत के सुख एवं सुरक्षा में
पर्यटन के समस्त घटक समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।
इसमें आपके शामिल हैं, आपके ट्रैवेल एजेन्ट/टूर आपरेटर
आपका परिवहन, आपका आवास
और सबसे महत्वपूर्ण आप स्वयं आप
और भावी पीढ़ी के लिए पर्यावरण सुरक्षित रखने के लिए
एक भागीदार और संरक्षक के रूप में आपके लिए
कुछ आसान नियम

सही टूर ऑपरेटर का चयन

पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए आपके उत्कृष्ट सलाहकार ऐसे टूर ऑपरेटर हैं जो:

- जो स्वतंत्र एवं निर्देशित पर्यटन को मानते हैं।
- जो पर्यटकों को विस्तृत और गहन जानकारी देते हैं।
- जो पर्यटकों को संवेदनशील पारिस्थितिक व्यवस्था को प्रभावित करने से बचने की सलाह देते हैं।
- यात्रियों को देशी पशुओं और पौधों के बारे में जानकारी देते हैं और बताते हैं कि उनके साथ कैसा बरताव करना है।
- पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम में सक्रियता के साथ भागीदारी करते हैं।
- साहित्य और संक्षिप्त विवरण देते हैं और उदाहरण प्रस्तुत करते हैं तथा भूल सुधार करते हैं।
- पर्यटन के एकत्र होते हुए प्रभावों से बचाव का प्रयत्न करते हैं और ऐसे क्षेत्रों से बचते हैं जहाँ प्रबंधन का अभाव हो और अधिक पर्यटन आते हों।
- समुचित नेतृत्व का उपयोग करते हों और ऐसे छोटे समूह बनाते हैं जो पर्यटक स्थलों पर कम से कम प्रभाव डालें।

पारिस्थितिक स्नेही यात्रा

सुरक्षित एवं पर्यावरणीय दृष्टि से स्वस्थ रूप में वहाँ पहुँचिए :

- यदि आपकी टैक्सी या बस अधिक धुआँ छोड़ती है तो विरोध कीजिए। यदि आपके पास विकल्प है तो ऐसी गाड़ी पर सवारी करने से मना कर दीजिए।
- जहाँ संभव हो वहाँ कई लोग मिलकर कार का उपयोग कर सकते हैं। इससे प्रदूषण में आपका योगदान कम हो जाता है और इस प्रकार यात्रा में व्यय भी कम हो जाता है।
- जहाँ तक आवश्यक हो वहीं तक मोटरगाड़ी का उपयोग कीजिए। साइकिल इस्तेमाल कीजिए या पैदल चलिए। जहाँ संभव हो वहाँ दृश्य का आनन्द उठाने और स्वस्थ्य रहने का यही तरीका है।
- अपने चालक को अनावश्यक हॉर्न बजाने से रोकिए। यह असभ्य तरीका भी है और हर एक शांति भी भंग करता है।

- अपनी यात्रा से उत्पन्न गंदगी को इधर उधर मत फेंकिए और उचित स्थान मिलने पर कूड़ेदान में डालिए। याद रखिए कि सड़क के किनारे गंदगी हर एक की आँख में चुभती है और पर्यावरण के लिए हानिकारक भी होती है।

अपने गन्तव्य पर क्या करना है और क्या नहीं

एक बार जब आप वहाँ पहुँच जाएं तो आप :

- वन अवरोपण सीमित कीजिए–खुले क्षेत्र में न स्वयं आग जलाइए न औरों को ऐसा करने दीजिए। एक मामूली सी असावधानी पूर्वक जलाई गई आग सम्पूर्ण वन के विनाश का कारण बन सकती है।
- जहाँ पानी दुर्लभ जलाऊ लकड़ी पर गरमाया जाता हो वहाँ इसका कम से कम उपयोग कीजिए।
- कागज, प्राकृतिक कचरे और अन्य कूड़े कचरे को जला दें या जमीन में गाड़ दें और न नष्ट हो सकने वाले कूड़ों जैसे प्लास्टिक के थैलों, रद्दी पैकेटों, कांच की बोतलों और टीन के डिब्बों के पुन: उपयोग की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- पेड़ों पर अपना नाम खोदना बन्द कर दीजिए क्योंकि उनको पीड़ा होती है। चट्टानों के फलक पर आपकी चित्रकारी प्रदूषणात्मक प्रवृतियों के निशान हैं जिन्हें सब घृणा से देखते हैं।
- स्थानीय जल को स्वच्छ रखिए और सरिताओं और स्रोतों में रासायनिक डिटर्जेंट का उपयोग न कीजिए। यदि शौचघर की सुविधा उपलब्ध न हो तो यह सुनिश्चित कर लीजिए कि आप जल स्रोत से कम से कम 30 मीटर दूर हैं और मल को जमीन में गाड़ दें।
- पौधों को पनपने के लिए उनको उनके देशी माहौल में छोड़ दें–प्राकृतिक आरक्षित क्षेत्र में पौधों और उनकी जड़ों की कटाई अवैध है।
- वन्य प्राणियों के क्षेत्र में जोर की ध्वनि निकालने, रेडियो या टेपरिकॉर्डर बजाने से बचिए। याद रखिए कि अप्राकृतिक ध्वनि प्राकृतिक माहौल में खप नहीं पाते।
- पशुओं और पक्षियों को खाना न खिलाएं आप इस प्रकार उनके चारा खोजने या शिकार करने के कौशल को शायद क्षति पहुँचाएंगे और आपका भोजन उन्हें अस्वस्थ भी कर सकता है।
- यदि आप किसी को पशुओं या पक्षियों को चोट पहुँचाते या शिकार करते देखें और यदि आप स्वयं उन्हें न रोक सकें तो तुरंत अधिकारियों को सूचित कीजिए।
- लोगों को फूल या पत्ती तोड़ने से रोकिए। वह जिस स्थिति में है उन्हें वैसे ही छोड़ देना चाहिए ताकि सब लोग उनसे आनन्द ले सकें।
- फोटो खींचने या वीडियो कैमरे से चित्रांकन को सदैव प्रोत्साहित किया गया है किंतु पर्यावरण को कभी न भूलिए। याद रखिए कि फ्लैश, खासकर क्लोजअप के उपयोग से जंगली जानवरों और अण्डों पर बैठे पक्षियों के शांतिपूर्ण जीवन में बाधा उत्पन्न हो सकती है और वे बेचैन और अशांत हो सकते हैं।

स्थान के विषय में जानकारी प्राप्त करना अपनी जानकारी बाँटिए

स्थान के विषय में आप जितना जानते हैं वहाँ उससे कहीं अधिक मौजूद है

- यात्रा के लिए निकलने से पहले गंतव्य स्थल से संबंधित ज्यादा से ज्यादा साहित्य पढ़िए। क्षेत्र के बारे में आपको जितनी अधिक जानकारी होगी आप उतना ही ज्यादा आनन्द उठा पाएंगे।
- स्थानीय प्राकृतिक आरक्षित क्षेत्र/उद्यान के अधिकारी सूचना के अच्छे स्रोत हैं–उनसे प्रश्न करने में संकोच मत कीजिए।

- स्थानीय लाइसेंस प्राप्त गाइड की सेवाएं प्राप्त करना यदि संभव हो तो प्राप्त कर लें। वह आपकी रूचि के अनुसार ही अपनी व्यक्तिगत सेवाएं अर्पित करेगा।
- जहाँ तक संभव हो अधिक से अधिक फोटो खींचिए या वीडियो कैमरे का उपयोग कीजिए। याद रखिए कि अपने अनुभवों को वापस आकर परिवारजन या मित्रों के साथ बाँटने का यह सबसे अच्छा साधन है।
- अपने अनुभव, यात्रा, स्थल और जो कुछ भी आपने देखा, सुना–के बारे में लिखिए। अज्ञान जितना कम होगा, पर्यावरण का उतना ही भला होगा।

ठहरने की उपयुक्त जगह की खोज

आपको ऐसे होटलों/अतिथि गृहों/ शिविरों में ठहरना चाहिए जो :

- स्थल के अनुकूल हो, जिसमें स्थानीय संसाधनों का दुरुपयोग न हुआ हो या जिसके लिए पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाया गया हो और जो नाजुक क्षेत्रों, प्रजातियों और सौंदर्य को बचाने में सहायक हो।
- ऊर्जा संरक्षण की आदत डालिए।
- ऐसा उपभोग कम कीजिए जिससे मलबा हो और बचे हुए मलबे को संसाधित कीजिए।
- ताजे जल का उपयोग कीजिए और मल जल के निपटारे को नियंत्रित कीजिए।
- दूषित वायु और प्रदूषण को नियंत्रित कीजिए या घटाइए।
- शोर के स्तर का निरीक्षण, नियंत्रण कीजिए और उन्हें कम करने का प्रयास कीजिए।
- पर्यावरण विरोधी उत्पादों जैसे एस्बेस्टस, सी फ सी अर्थात कार्बन बनने वाले रसायन और विषैले कीटनाषकों से बचना या नियंत्रित करना चाहिए।
- यदि बिजली न हो तो कम ऊर्जा खपत करने वाले मिट्टी के तेल के चूल्हे का उपयोग कीजिए।